Mahendra's

UP POLICE कांस्टेबल/ UP लेखपाल

HINDI

अलंकार

भाग–2

LIVE 03:00 PM

अलंकार-

अलंकार का शाब्दिक अर्थ है-सजावट,श्रृंगार, आभूषण।

काव्यशास्त्र में अलंकार शब्द का प्रयोग काव्य सौन्दर्य के लिए होता है, अर्थात् काव्य रूपी काया की शोभा बढ़ाने वाले अवयव को अलंकार कहते हैं।

जिस प्रकार आभूषण शरीर की शोभा बढ़ाते हैं, उसी प्रकार काव्य में प्रयुक्त होने वाले अलंकार शब्दों एवं अर्थों की सुन्दरता में वृद्धि करके चमत्कार उत्पन्न करते हैं।

अलंकार के भेद–अलंकार के मुख्यतः दो भेद हैं

1.शब्दालंकार– जहाँ शब्दों के कारण काव्य के सौन्दर्य में चमत्कार आ जाता है, वहाँ शब्दालंकार होता है।

2.अर्थालंकार- जहाँ पर अर्थ कारण काव्य के सौन्दर्य में वृद्धि होती है अर्थात् चमत्कार आ जाता है, उसे अर्थालंकार कहते हैं।

अपवाद - जहाँ शब्द और अर्थ दोनों में ही विशेषता आ जाने से सौन्दर्य या चमत्कार उत्पन्न हो, वहाँ **'उभयालंकार'** होता है।

1.शब्दालंकार–

जहाँ शब्दों के कारण काव्य के सौन्दर्य में चमत्कार आ जाता है, वहाँ शब्दालंकार होता है।

- शब्दालंकार के भेद हैं -

(i) अनुप्रास अलंकार
(ii) यमक अलंकार
(iii) श्लेष अलंकार

(1)अनुप्रास अलंकार-

जहाँ पर एक ही वर्ण की बार-बार आवृत्ति हो, चाहे उनके स्वर मिले या न मिलें, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

उदाहरण:कान कानन कुंडल मोरपखा पै बनमान विराजति है

यहाँ पर कान, कानन, कुंडल में 'क' वर्ण की आवृत्ति तीन बार हुई है। अत: अनुप्रास अलंकार है।

सामान्यतः अनुप्रास अलंकार के 5 माने हैं गए

(1) छेकानुप्रास

(2) वृत्यानुप्रास

(3) श्रुत्यानुप्रास

(4) लाटानुप्रास

(5) अन्त्यानुप्रास

(1) छेकानुप्रास–

जहाँ एक व्यंजन वर्ण अथवा अनेक व्यंजन वर्ण की आवृत्ति केवल एक बार होती है।

उदाहरण –

- विविध सरोज सरोवर फूले । (स)
- घोर घाम हिम बाहर सुखारी (घ)
- वर दंत की पंगति कुंद कली('क')

- अमिय भूरिमय चूरन चारु।

समन सकल भवरुज परिवार ॥ ('च' तथा 'स')

- रसवती रसना करके कही। (र ,क)
- कथित थी कथनीय गुणावली। (क, थ)

(2)वृत्त्यनुप्रास – जहाँ एक अथवा अनेक व्यंजन वर्णों की आवृत्ति एक से अधिक बार हो।

उदाहरण –

- तरणि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाये।
- प्रतिभट कटक कँटीले केते काटि-काटि,
- कालिका-सी किलकि कलेऊ देति काल को।
- सो सुख सुजस सुलभ मोहि स्वामी ।
- मुदित महीपति मन्दिर आये।

  सेवक सचिव सुमन्त बुलाये।।

(3) श्रुत्यानुप्रास- जहाँ कण्ठ, तालु आदि एक स्थान से बोले जाने वाले वर्णों की आवृत्ति होती है।

उदाहरण:

- तुलसीदास सीदत निसिदिन देखत तुम्हार निठुराई ।

इसमें दन्त्य वर्णों त, ल, स, न, र की आवृत्ति हुई है।
इसलिए श्रुत्यानुप्रास अलंकार है।

(4) लाटानुप्रास :

जहाँ एक शब्द अथवा वाक्यखण्ड की उसी अर्थ में आवृत्ति हो किन्तु तात्पर्य अथवा अन्वय में भेद हो।

पूत सपूत तो का धन सञ्चय ।
पूत कपूत तो का धन सञ्चय ॥

मात्र सपूत और कपूत शब्द की भिन्नता के आधार पर पूर्ण वाक्य अथवा वाक्य-खण्ड एक होते हुए भी भिन्नार्थक का द्योतक हो गया है।

सुपुत्र के लिए धन-सञ्चय की आवश्यकता नहीं क्योंकि वह अर्जन की क्षमता रखता है।

दूसरी ओर, कुपुत्र के लिए धन सञ्चय का कोई महत्त्व नहीं क्योंकि अपने अविवेक से वह उस धन को अविलम्ब ही समाप्त कर देगा।

(5)अन्त्यानुप्रास-

जहाँ चरण या पद के अन्त में स्वर या व्यंजन की समानता होती है, वहाँ अन्त्यानुप्रास होता है।

उदाहरण-

गुरु पद रज मृदु मंजुल अंजन।
नयन अमिय दृग दोष विभंजन।

यहाँ दोनों पंक्तियों के अन्त में 'जन' व्यंजन की समानता है अतः अन्त्यानुप्रास है।

2.यमक अलंकार-

जहाँ एक शब्द की आवृत्ति दो अथवा दो से अधिक बार होती है किन्तु उनके अर्थ में भिन्नता होती है, वहाँ यमक अलङ्कार होता है।

कनक कनक ते सौगुनी मादकता अधिकाय।
या खाए बौरात नर या पाए बौराय।।

प्रथम कनक का अर्थ 'सोना' और दूसरे कनक का अर्थ- धतूरा है।

(2)माला फेरत जग गया, फिरा न मन का फेर।
कर का मनका डारि दे, मन का मनका फेर ।

- पद्य में मनका शब्द का दो बार प्रयोग किया गया है।
- पहली बार 'मनका' का आशय माला के मोती से है,
- दूसरी बार 'मनका' से आशय है मन की भावनाओं से

(3) काली घटा का घमंड घटा ।

3.श्लेष अलंकार-

श्लेष का शाब्दिक अर्थ है, चिपकना अथवा चिपका हुआ। किसी वाक्य में प्रयुक्त एक शब्द अथवा अनेक शब्दों में दो अथवा इससे अधिक अर्थों का सम्पृक्त होना श्लेष कहलाता है।

माया महाठगिनी हम जानी।
तिरगुन फाँस लिए कर डोलै, बोलै मधुरी बानी ॥

यहाँ तिरगुन शब्द में शब्द-श्लेष की योजना है। इसके 2 अर्थ हैं-

(i) तीन गुण-सत्त्व - (सत), रजस् (रज) और तमस् (तम)।

(ii) तीन भागों वाली रस्सी।

रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरे, मोती, मानुस, चून।।

यहाँ दूसरी पंक्ति में 'पानी' श्लिष्ट शब्द है, जो प्रसंग के अनुसार तीन अर्थ दे रहा है।

मोती के अर्थ में – चमक
मनुष्य के अर्थ में – प्रतिष्ठा और
चूने के अर्थ में – जल

मंगन को देख पट देत बार-बार है।

इस काव्य-पंक्ति में 'पट' के दो अर्थ हैं-

वस्त्र और किवाड़।

पहला अर्थ है-वह व्यक्ति किसी याचक को देखकर उसे बार-बार 'वस्त्र' देता है और दूसरा अर्थ है-वह व्यक्ति याचक को देखते ही दरवाजा बंद कर लेता है।

1.अनुप्रास अलंकार के कितने भेद हैं -

(a)3

(b)4

(c)5

(d)6

अनुप्रास अलंकार-

जहाँ पर एक ही वर्ण की बार-बार आवृत्ति हो, चाहे उनके स्वर मिले या न मिलें, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

कान कानन कुंडल मोरपखा पै बनमान विराजति है

यहाँ पर कान, कानन, कुंडल में 'क' वर्ण की आवृत्ति तीन बार हुई है। अत: अनुप्रास अलंकार है।

सामान्यतः अनुप्रास अलंकार के 5 माने हैं गए

(1) छेकानुप्रास
(2) वृत्यानुप्रास
(3) श्रुत्यानुप्रास
(4) लाटानुप्रास
(5) अन्त्यानुप्रास

2. “विविध सरोज सरोवर फूले”- में अलंकार का भेद हैं
–

(1)   छेकानुप्रास

(2) वृत्यानुप्रास

(3) श्रुत्यानुप्रास

(4) लाटानुप्रास

छेकानुप्रास–

जहाँ एक व्यंजन वर्ण अथवा अनेक व्यंजन वर्ण की आवृत्ति केवल एक बार होती है।

उदाहरण –

- विविध सरोज सरोवर फूले । (स)
- घोर घाम हिम बाहर सुखारी (घ)

3. मुदित महीपति मन्दिर आये। सेवक सचिव सुमन्त बुलाये।। में अलंकार का भेद हैं –

(1) छेकानुप्रास

(2) वृत्यानुप्रास

(3) श्रुत्यानुप्रास

(4) लाटानुप्रास

वृत्त्यनुप्रास –

जहाँ एक अथवा अनेक व्यंजन वर्णों की आवृत्ति एक से अधिक बार हो।

- तरणि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाये।
- मुदित महीपति मन्दिर आये।
  सेवक सचिव सुमन्त बुलाये।।

4. जहाँ कण्ठ, तालु आदि एक स्थान से बोले जाने वाले वर्णों की आवृत्ति होती है।

(1) छेकानुप्रास

(2) वृत्यानुप्रास

(3) श्रुत्यानुप्रास

(4) लाटानुप्रास

श्रुत्यानुप्रास- जहाँ कण्ठ, तालु आदि एक स्थान से बोले जाने वाले वर्णों की आवृत्ति होती है।

उदाहरण:

- तुलसीदास सीदत निसिदिन देखत तुम्हार निठुराई ।

इसमें दन्त्य वर्णों त, ल, स, न, र की आवृत्ति हुई है। इसलिए श्रुत्यानुप्रास अलंकार है।

5.पूत सपूत तो का धन सञ्चय ।
पूत कपूत तो का धन सञ्चय ॥
में अलंकार का भेद हैं –

(1) छेकानुप्रास

(2) वृत्यानुप्रास

(3) श्रुत्यानुप्रास

(4) लाटानुप्रास

लाटानुप्रास :

जहाँ एक शब्द अथवा वाक्यखण्ड की उसी अर्थ में आवृत्ति हो किन्तु तात्पर्य अथवा अन्वय में भेद हो।

पूत सपूत तो का धन सञ्चय ।
पूत कपूत तो का धन सञ्चय ॥

सुपुत्र के लिए धन-सञ्चय की आवश्यकता नहीं क्योंकि वह अर्जन की क्षमता रखता है।

दूसरी ओर, कुपुत्र के लिए धन सञ्चय का कोई महत्त्व नहीं क्योंकि अपने अविवेक से वह उस धन को अविलम्ब ही समाप्त कर देगा।

6. गुरु पद रज मृदु मंजुल अंजन।
नयन अमिय दृग दोष विभंजन। में अलंकार का भेद हैं –

(1) छेकानुप्रास

(2) वृत्यानुप्रास

(3) श्रुत्यानुप्रास

(4) अन्त्यानुप्रास

अन्त्यानुप्रास-

जहाँ चरण या पद के अन्त में स्वर या व्यंजन की समानता होती है, वहाँ अन्त्यानुप्रास होता है।

उदाहरण-

गुरु पद रज मृदु मंजुल अंजन।
नयन अमिय दृग दोष विभंजन।

यहाँ दोनों पंक्तियों के अन्त में 'जन' व्यंजन की समानता है अतः अन्त्यानुप्रास है।

7. जहाँ एक शब्द की आवृत्ति दो अथवा दो से अधिक बार होती है किन्तु उनके अर्थ में भिन्नता होती है, वहाँ अलङ्कार होता है –

(1) छेकानुप्रास अलंकार

(2) श्लेष अलंकार

(3) अनुप्रास अलंकार

(4) यमक अलंकार

यमक अलंकार-

जहाँ एक शब्द की आवृत्ति दो अथवा दो से अधिक बार होती है किन्तु उनके अर्थ में भिन्नता होती है, वहाँ यमक अलंकार होता है।

कनक कनक ते सौगुनी मादकता अधिकाय।
या खाए बौरात नर या पाए बौराय।।

प्रथम कनक का अर्थ 'सोना' और दूसरे कनक का अर्थ-धतूरा है।

2.अर्थालंकार-

जहाँ अर्थ के कारण काव्य में रमणीयता आती है वहाँ अर्थालंकार होता है।

दूसरे शब्दों में-जब शब्द की अपेक्षा अर्थ का अलंकार अधिक हो तब है।

1.उपमा अलंकार

समान धर्म, स्वभाव, शोभा, गुण आदि के आधार पर जहाँ एक वस्तु की तुलना दूसरी वस्तु से की जाती है, वहाँ उपमा अलंकार होता है।

उपमा अलंकार के चार अंग हैं :

(i) उपमेय (प्रस्तुत) : जिसकी उपमा दी जाए।

(ii) उपमान (अप्रस्तुत) : जिससे उपमा दी जाए।

(iii) समानतावाचक शब्द: जिमि, इव, सा, से , सी, ज्यों, जैसे, सम, समान ,सद्रश, सरिस आदि।

(iv) समान धर्म (साधारण धर्म) : उपमान और उपमेय के बीच, जो बात समान रूप से पायी जाती है, उसे 'समान धर्म' कहते हैं।

उदाहरण के लिए,
राम का मुख कमल के समान सुन्दर है।

राम का मुख - उपमेय
कमल - उपमान
के समान - समानतावचाक शब्द
सुन्दर - समानधर्म

स्वभाव, शोभा, गुण आदि के आधार पर जहाँ एक वस्तु की तुलना दूसरी वस्तु से की जाती है, वहाँ उपमा अलङ्कार होता है।

अन्य उदाहरण-

- हाय फूल-सी कोमल बच्ची हुई राख की थी ढेरी।
- यह देखिए, अरविंद से शिशुवृंद कैसे सो रहे।
- तब तो बहता समय शिला सा जम जाएगा।
- कमल सा कोमल गात सुहाना।
- हरिपद कोमल कमल से।
- पीपर पात सरिस मन डोला

उक्त सभी पंक्तियों में वाचक शब्द सा, से, सी, सम, सरिस, आदि के प्रयोग द्वारा उपमेय में

उपमान की समानता व्यक्त की गई है।

2.उत्प्रेक्षा अलंकार-

जहाँ उपमेय में उपमान की संभावना व्यक्त की जाय वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।

संभावना व्यक्ति करने के लिए जनु, जानो, जनहुँ, मनु, मानो, मनहुँ, जौं, त्यों,जैसे-आदि शब्दों का प्रयोग देखने को मिलता है।

- कहती हुई यों उत्तरा के नेत्र जल से भर गए।
- सिर फट गया उसका वहीं मानो अरुण का रंग का घड़ा।

3.रूपक अलंकार

जहाँ उपमेय में उपमान की अत्याधिक समानता के कारण उपमान का उपमेय में अभेद आरोपण कर दिया जाता है।
अर्थात् उपमेय और उपमान में कोई भेद प्रकट नहीं जाता,वहाँ अलंकार होता है। प्राय: रूपक अलंकार में उपमेय और उपमान के बीच योजक चिह्न (-)पाया जाता है।

उदाहरण

मैंया मैं तो चंद्र-खिलौनालैहों।
चरण-कमल बन्दौं हरि राई।

धन्यवाद...